

सुने री मैंने रसिकन के हरि प्राण

सुने री मैंने रसिकन के हरि प्राण

सुने री मैंने ! रसिकन के हरि प्राण।

संकीर्तन सम्राट रसीलो, भगत जगत की शान ॥

कोकिल कण्ठ, मधुर स्वर लहरी, बरसे सुधारस धारा।

मधुर गान की तान अलौकिक, जादू भरा इकतारा ॥

सुन सुन धुन संगीत की सरगम, नाच उठें भगवान-सुने.

जा जा चरण धरे गुरुदेवा, नाम की गंग बहाई।

कृष्ण नामरस पान करन को, उमड़ पड़ी हरिजाई ॥

लाखों तार दीये बिन स्वार्थ, दे भगती दा दान-सुने.

या मीरा या ब्रज गोपिका, या प्यारो बृजचंदा।

या नामा गौरंग कबीरा, या हरिदास मुकुन्दा॥

या कोई युग-पुरुष अवतारी, आयो करन कल्याण-सुने.

खूब पीया पिलाया तूने, भर भर कर पैमाना।

सजी रहे तेरी साकिया महिफल, रहे आबाद महिखाना ॥

आ गई रास 'मधुप' को तेरी, मन मोहिनी मुस्कान-सुने.

कवि : [सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' \(मधुप हरि जी महाराज\) अमृतसर \(9814668946\)](#)

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/36846/title/sune-ri-mene-rasikan-ke--hari-pran>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |